Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-23

(CDXLVI) 346

प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा

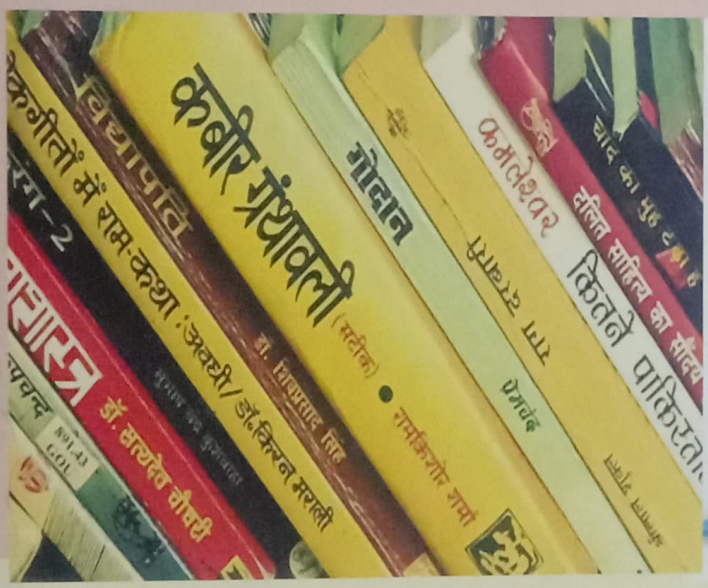

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social Research & Development Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Vasant Bhosle
Principal
Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila Mahavidyalaya, Parbhani

Editor
Prof.Nirmala Jadhav
Dept. of Hindi,
Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila Mahavidyalaya, Parbhani

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

प्रा. डॉ. वनिता कुलकर्णी

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College
Sonpeth Dist Parbhani (M.S.)

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

October-23

(CDXLVI) 446

प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा

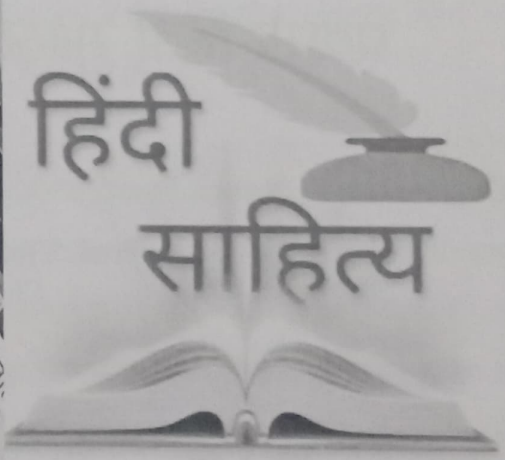

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Vasant Bhosle
Principal
Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila
Mahavidyalaya, Parbhani

Editor
Prof.Nirmala Jadhav
Dept. of Hindi,
Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila
Mahavidyalaya, Parbhani

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publication Amravati

Late Ramesh Warpudkar Arts, Commerce & Science College Sonpeth Dist.Parbhani (M.S.)

45	प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में अमरिकी महिला कथाकारों का योगदान (विशेष संदर्भ- सुषमा बेदी) प्रा. सुनिता मधुकर सरदार	148
46	उषा प्रियंवदा की कहानी में व्यक्त विदेशों में भारतीयों की स्थिति (चांदनी में बर्फ पर - कहानी के संदर्भ में) प्रा. डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे	153
47	प्रवासी साहित्य का वैश्विक परिदृश्य प्रा. डॉ. वनिता बा. कुलकर्णी	145 155
48	हिंदी का प्रवासी साहित्य प्रा . डॉ. प्रणिता फड /मुंढे	159
49	प्रवासी हिंदी कहानीकारों के कहानियों में सांस्कृतिक संदर्भ डॉ. अर्चना पत्की	161
50	प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व डॉ.अनिता छाबरा	164
51	शेषयात्रा उपन्यास में चित्रित नारी जीवन प्रवासी परिदृश्य में डॉ.सफरमा	169
52	हिंदी साहित्य में उभरता प्रवासी साहित्य प्रो . डॉ. बबन बोडके	172
53	प्रवासी हिंदी कविता का अनुशीलन प्रो. डॉ.संजीव कुमार नरवाडे	175
54	प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा एवं महिला साहित्यकारों का योगदान राणी अर्जुन लोहकरे (शोधार्थी)	181
55	शरद आलोक की कहानी 'विसर्जन से पहले' (भारत और पश्चिमी देशों की सामाजिक व सांस्कृतिक भिन्नता के संदर्भ में) प्रो. डॉ .वंदना श्रीवास्तव	183
56	प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का हिंदी साहित्य में योगदान - डॉ . विजय शिवराम पवार तथा डॉ. मुकुंद माधवराव कवडे	187
57	हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण डॉ. रजिया शहनाज शेख अब्दुल्ला	190
58	प्रवासी हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति कॅप्टन डॉ.अनिता मधुकर शिंदे	194
59	साहित्यकार 'उषा प्रियंवदा' के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री जीवन प्रा. डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे	198
60	प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व प्रा. दर्शना कुमारी	202
61	प्रवासी हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना प्रा. डॉ. मारुती उत्तम खेडेकर	206
62	सांस्कृतिक सेतु की संवाहिका : 'सुधा ओम ढिंगरा' प्रा. डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे	209
63	प्रवासी हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति प्रा. डॉ.संतोष विजय येरावार.	212

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDXLVI) 446
ISSN : 2278-9308
October, 2023

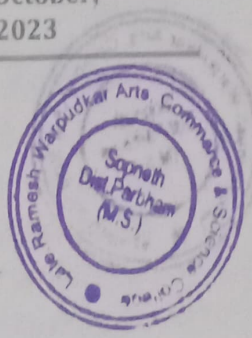

प्रवासी साहित्य का वैश्विक परिदृश्य

डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव

हिंदी विभागाध्यक्षा कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ ता.सोनपेठ जी. परभणी
पिन कोड- 431516 ,दूरभाष- 9423138878 ,मेल- kulkarnivanita02@gmail.com

प्रस्तावना —

प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य में जुड़ती एक नवीन विद्या है. एक नवयुगीन साहित्यिक विमर्श है। साहित्य के विशाल वटवृक्ष की अनेक समृद्ध और सशक्त शाखा में से एक शाखा प्रवासी साहित्य की भी है, जो दिन - प्रतिदिन अपनी रचना धर्मिता से हिंदी साहित्य को सधन बनाने का कार्य कर रही है। साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बचपन से मिलते हैं। यदि साहित्य की अभिव्यक्ति विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। विदेश में बैठे हिंदी साहित्यकार ने अपने लेखन का माध्यम हिंदी चुना क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के आंतरिक संबंध को बनाए रखना चाहते हैं। प्रवासी लेखक प्रवास के दुख दर्द की संवेदनाओं के साथ अपने देश में संस्कार को जोड़कर उनमें व्याप्त विषमताओं को कागज पर उतार देता है, और यह संवेदनाएं हैं सहज ही सबसे जुड़ सबकी संवेदनाएं बन जाती है। भारत के लोग विश्व के विभिन्न देशों में निवास कर रहे हैं और वही रहते हुए वे लोग हिंदी को हिंदी साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य न केवल पूरी दुनिया में अपना स्थान बनाया है बल्कि अपनी पहचान भी बना चुका है। प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है। आज हिंदी पूरे विश्व की भाषा बनती जा रही है। प्रवासी साहित्यकारों की वजह से आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान भी बना रही है। विदेशी पृष्ठभूमि ने हिंदी रचना क्षेत्र को विस्तृत फलक दिया है। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से हिंदी और उसके साहित्य को वैश्विक आधार बना दिया है। और भारत में भी हिंदी साहित्य की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रवासी हिंदी साहित्यकार संवेदना संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करते हैं।

प्रवासी साहित्य का अर्थ —

प्रवास शब्द ' वास ' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगने से बना है। 'वास' का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है। और 'प्र' उपसर्ग लगने से इसका अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना तथा अपने देश अथवा घर से बाहर रहना। प्रवासी साहित्य का मतलब प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य है। प्रवास शब्द का अर्थ है विदेश गामान या विदेशी यात्रा। जिसका अर्थ है किसी दूसरे देश में रहने वाला व्यक्ति प्रवासी है। प्रवासी ऐसे लोगों का एक बड़ा समूह है जिनकी विरासत या मातृभूमि एक समान है और जो विश्व के अन्य स्थलों में स्थानांतरित हो गए हैं।

प्रवास शब्द का मूल अर्थ विस्थापन से जुड़ा है, जब व्यक्ति अपनी मातृभूमि जन्म स्थान और देश को छोड़कर नई भूमि और नए आवास के साथ नए भाव विचारों के धरातल पर पहुंचता है और उसे अभिव्यक्ति का विषय बनाता है। उस अभिव्यक्ति में संस्कृति सभ्यता साहित्य व भारतीय अस्तित्व को कायम रखने का स्तुत्य प्रयास करता रहता है और इसी प्रयास से प्रवासी साहित्य का उदय होता है।

प्रवासी साहित्य का उद्भव और विकास —

प्रवासी साहित्य का उद्भव और विकास भारतीय प्रवासी नाम से हुआ है। जिसका हिंदी रूपांतरण है इंडियन डायस्पोरा जिसका अर्थ है वह बिखरी हुई आबादी जो विशेष कर अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में जा बसी है। डा

रामदरश मिश्र ने कहा है कि "प्रवासी साहित्य ने हिंदी को नई जमीन दी है, और हमारे साहित्य का दायरा विस्तृत किया

मुकेश गर्ग प्रवासी साहित्य के बारे में कहती है कि "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने के बजाय उसे हिंदी की मुख्य धारा में स्थान दिया जाए।"

अमेरिका में रहने वाली प्रवासी हिंदी रचनाकार देवी नागरानी प्रवासी हिंदी साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखती है कि "हिंदी का जो साहित्य है विश्व में किसी की अंतरराष्ट्रीयता को बुलंदी के साथ-साथ स्थापित कर रहा है। इस बात में कोई शंका नहीं चाहे वह मॉरीशस का हिंदी साहित्य हो या अमेरिका का, सूरीनाम हो या इंग्लैंड का हिंदी साहित्य की इस धारा उसी में मिलकर एक राष्ट्रीय भाषा हिंदी की सरिता बनकर बहेगी। तभी वह सैलाब अंतरराष्ट्रीय धरातल पर अपना स्थान पा सकेगा। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी के अंतरराष्ट्रीयकरण का सबसे सशक्त मार्ग है।"

प्रवासी साहित्यकारों ने वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रवासी साहित्यकार अपनी जन्मभूमि एवं अपनी बोली भाषा के प्रति उदार दिखते हैं। सभी ने अपनी भाषा और बोली व संस्कृति से लगाव बनाया हुआ है। इस साहित्य ने विदेशी मिट्टी में भी देशी संस्कारों की महक मिलती है। प्रवासी हिंदी साहित्य अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ-साथ पाठकों से प्रवास की संस्कृति संस्कार एवं उस भूभाग के लोगों की स्थिति से भी हमें अवगत कराता है। विदेशों में प्रवासी हिंदी

सांस्कृतिक दूत का काम करता है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध संस्कृति है। अतः पूरी दुनिया में भारतीय मूल के लोग अपने साथ-साथ भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। प्रवास के शुरुआत में प्रवासी रचनाकारों का जो चित्र स्मृतियों से आच्छादित रहता था वह नए परिवेश के प्रति भी चिंतन मनन करने लगा और उनकी रचनाओं में इसने गुणात्मक अंतर पैदा किया। इसे आचार्य शुक्ल की प्रसिद्ध पंक्ति "साहित्य किसी देश की जनता की चित्रवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।" के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है।

1909 के दशक के बाद भारतीयों का हिंदी के प्रति उत्साह कारणों से यकीनन बढा है। एक तो अब भारतीयों का भारत से और उसकी भाषण से इंटरनेट, व्हाट्सएप और सस्ते फोन के कारण नाता गहरा हो गया। प्रवासी साहित्यकारों की साहित्यिक परंपरा हिंदी साहित्य को समृद्ध और विकसित बनाने में अपनी महती भूमिका अदा करते हुए विदेशी धरती पर अपनी संस्कृति, भाषा और संस्कारों को कायम रख रही है। देश से इतर विदेशों में हिंदी साहित्य के विकास के साथ नई दशा व दिशा तय कर रहे हैं। हिंदी भाषा के वैश्विक संदर्भ के विषय में डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय कहते हैं- " यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्व भाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है।" वह दिन दूर नहीं जब प्रवासी साहित्यकार अपनी सृजनात्मक लेखनी से हिंदी को वैश्विक पाठकों तक पहुंचाते हुए ऊंचे सिंहासन पर विराजमान कर उसे गौरवान्वित करेंगे।

प्रवासी हिंदी साहित्य वैश्विक परिदृश्य —

विश्व के विभिन्न देशों में भारतीय मूल के लोग फैले हुए हैं। विदेशों में रहते हुए भी हिंदी लेखकों ने हिंदी साहित्य को जन-जन तक पहुंचाया है। प्रवासी साहित्य अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, स्थिति और सृजन प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिंदी संसार में अपना योगदान किया है। भारत में रचे जाने वाले हिंदी साहित्य से यह प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना परिवेश और सरोकार से एकदम भिन्न है, क्योंकि उनकी चिंताएं, समस्याएं तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न है। इस प्रकार हिंदी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है- एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्ठता रखता है और हिंदी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है। दूसरे वह हिंदी साहित्य को वैश्विक

महत्वपूर्ण योगदान रखता है। प्रवासी साहित्य के माध्यम से हम प्रवासियों की जिंदगी से सहज ही जिंदगी से जुड़कर उनके प्रवास के अनुभवों को सांझा कर रहे हैं। वर्तमान प्रवासी लेखकों से ये अपेक्षाएं की जा रही हैं कि समन्वयकारी स्थिति से कार्य करें और देश दुनिया के समस्त संकटों से उबर कर साहित्य में समन्वयात्मक दृष्टिकोण स्थापित करें। लेखक संस्कृतियों को निकट लाकर समन्वयवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दे सकता है। आर्थिक जगत में भूमंडलीकरण की धारणा जिस प्रकार फलीभूत हो रही है और विश्व गांव का सपना देखा जा रहा है। सूचना क्रांति इस सपने को साकार करती दिखाई पड़ रही है। साहित्य जगत भी विश्व के इस प्रकार का नैकट्य लाया जा सकता है। समन्वय सदा से साहित्य का सर्वोत्कृष्ट गुण रहा है। आज से लगभग चारसौ वर्ष पूर्व भक्ति काल के शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने वर्ग- वर्ग में बटे समाज संप्रदायों और विचारधाराओं को समन्वित करने का युग परिवर्तनकारी कार्य किया था। अपनी इस विशिष्टता के कारण ही रामचरितमानस एक सर्वकालिक और सार्वजनिक ग्रंथ बन गया है। आधुनिक युग के महान घुमक्कड़ और विराट व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार राहुल सांस्कृत्यायन ने देश-विदेश के अगम्य क्षेत्र का न केवल अन्वेषण किया अपितु गंगा और वोल्गा नदियों पर अपनी दार्शनिक दृष्टि से समन्वयकारी विचारधारा को संतुष्ट किया है। आज प्रवासी हिंदी साहित्य से जुडी सबसे बड़ी अपेक्षा समन्वय की है।

प्रवासी भारतीय सारी दुनिया में फैले हुए हैं। "लगभग तीन करोड़ प्रवासी तथा भारतीय आज विश्व के लगभग चालीस देशों में रहते हैं। जिनको दो वर्गों में रखकर देखा जा सकता है। पहला वर्ग ऐसे भारतीयों का जिन्हें अंग्रेज, डच व फ्रांसीसी शासक अपने-अपने गुलाम देशों में गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले गए थे। भारत से फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, त्रिनिदाद गए इन गिरमिटिया मजदूरों ने हिम्मत नहीं हारी। तमाम कष्टों, तिरस्कार परेशानियों, और शोषण सहकर भी पराई भूमि में अपनी पहचान को बनाए रखा। यह लोग अपने साथ विरासत के रूप में धर्म ग्रंथ, लोकगीत, स्वभाषा, संस्कृति और परंपराओं को लेकर गए थे और तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद उन्होंने उन्हें सुरक्षित रखा, यही कारण है कि देश से दूर विदेशों में भारतीय भाषा व संस्कृति अक्षुन्न रही।"

भारतीय जहां - जहां भी गए अपने साथ अपनी संस्कृति अपना साहित्य और अपनी भाषा ले गए। वह जिस देश में भी रहे वहाँ की भाषा तो उन्होंने सीख ली, किंतु अपने मूल भाषा को वे भूले नहीं अपितु उसे अमूल्य निधि के समान सुरक्षित रखते हुए उसके सम्मान तथा उसकी सुरक्षा के प्रति हमेशा सजग रहे। फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में हिंदी भारतवंशियों के मध्य आज भी मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। तथा उसे वहां सम्मानित स्थान प्राप्त है, पर इनमें से कई देशों में हिंदी लुप्त होने के कगार पर है।" जिसकी सुरक्षा के लिए आज प्रयत्न आवश्यक है। प्रवासी हिंदी साहित्य अपनी विशेष पहचान के साथ हिंदी साहित्य में अपनी जड़े जमता हुआ नजर आ रहा है। हिंदी भाषा में किसी विशेष शक्ति और आकर्षण का ही कमाल है कि आज न केवल भारतीय साहित्यकार बल्कि विदेश में बसे भारतीय लेखक भी अपने अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी को बना रहे हैं। जिसके फल स्वरुप हिंदी साहित्य संसार दिनों दिन विस्तृत होता जा रहा है। कमल किशोर गोयनका प्रवासी हिंदी साहित्य के विषय में लिखते हैं कि, "आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी प्रवासी साहित्य की उपस्थित उसका सर्वेक्षण और विवेचन उसके स्वतंत्र अस्तित्व के साथ उसकी प्रतिष्ठा एवं महत्व का प्रमाण है। वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य तो हिंदी साहित्य की एक शाखा है, और यदि हम इस शाखा को काट देंगे तो हिंदी की जड़े कैसे मजबूत हो सकेगी।हिंदी भाषा और साहित्य की जड़ें चाहे स्वदेश में हो या परदेश में वह मजबूत तभी होगी जब उसकी शाखाएं फूलवती और फलवती होगी। हिंदी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट संसार का अंग है।" भारत के बाहर बसे प्रवासी साहित्यकारों द्वारा रचा जा रहा साहित्य विपुल मात्रा में सामने आ रहा है और लोग उसे खूब पढ़ भी रहे हैं। प्रवासी भारतीयों के कर कमलों द्वारा हिंदी में विस्तृत साहित्य उपलब्ध है। और निरंतर लिखा जा रहा है। हिंदी निर्विवाद रूप से विश्व स्तर की भाषा के रूप में स्वीकृत हो

Late Ramesh Warpudkar Arts Commerce & Science College Sopneth Dist.Parbhani (M.S.)

है। पूरे विश्व में उसके पढ़ने, बोलने और समझने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अगर सभी एक साथ जुड़ जाएँ तो हिंदी निर्विवाद रूप से विश्व की प्रथम भाषा है।

सारांश—

प्रवासी साहित्य प्रवासी लोगों के द्वारा लिखा गया साहित्य है। विश्व भर के प्रवासी हिंदी साहित्यकार अपनी मानसिक अनुभूति जीवन दृष्टि, यथार्थ के प्रति बौद्धिक भावनात्मक चेतना को लेकर हिंदी साहित्य को एक नई पहचान दे रहे हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य में किसी न किसी रूप में भारत विद्यमान है। प्रवासी हिंदी साहित्य की अपनी अलग संवेदना, विशिष्ट प्रवासी सोच एवं दृष्टिकोण है जो संस्कार के रूप में अपने परिवेश को ग्रहण करता है। प्रवासी हिंदी साहित्य अत्यंत संपन्न है। प्रवासी साहित्यकार भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत है। हम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनेक अनुभव, भावनाओं संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। प्रवासी हिंदी साहित्य को पहचान एवं सम्मान दिलाने में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान अद्वितीय है। इस प्रवासी हिंदी साहित्य से न केवल हिंदी का साहित्य समृद्ध हुआ है अपितु हिंदी को विश्व पटल पर भी पहचान मिली है। यह साहित्य प्रवासी साहित्यकारों का हिंदी और मातृभूमि के लिए न केवल प्रदेय है अपितु एक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी माध्यम है।

संदर्भ —

(1) हिंदी साहित्य का इतिहास- आ.रामचंद्र शुक्ल- कमल प्रकाशन- नवीनतम संस्करण -पृष्ठ 15
(2) प्रवासी भारतीयों की हिंदी की कहानी- सुरेंद्र गंभीर- प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ- संस्करण 2017 पृष्ठ 159
(3) हिंदी का विश्व संदर्भ- करुणा शंकर उपाध्याय- पृष्ठ 11
(4)प्रवासी हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी लेखन- उषा राज्य सक्सेना- वर्तमान साहित्य संपादक कुँवर पाल सिंह, नमिता सिंह- जनवरी- फरवरी 2006- पृष्ठ 62
(5) प्रवासी साहित्य भाव और विचार- संपादक संध्या गर्ग- दिल्ली साहित्य संचय- प्रथम संस्करण 2017- पृष्ठ 118
(6) प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य-विमलेश कांति वर्मा- भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली,2016- पृष्ठ 12
(7) प्रवासी साहित्य गवेषणा अंक 103 कमल किशोर गोयनका- जुलाई- सितंबर 2014- पृष्ठ 11

Principal
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College,Sonpeth.Dist.Parbhani